सुदर्शनाष्टकम्

श्रीमान् वेङ्कट नाथार्यः कवितार्किक केसरी।
वेदान्ता चार्य वर्योमे सन्निधत्तां सदाहृदि॥

प्रतिभट श्रेणि भीषण	वर गुण स्तोम भूषण
जनिभय स्थान तारण	जगदवस्थान कारण।
निखिल दुष्कर्म कर्शन	निगम सद्धर्म दर्शन
जय जय श्री सुदर्शन	जय जय श्री सुदर्श्नन॥ १॥
शुभ जगद्रूप मण्डन	सुर गण त्रास खण्डन
शत-मख ब्रह्म वन्दित	शत-पथ ब्रह्म नन्दित।
प्रथित विद्वत्सपक्षित	भजदहिर्बुध्न्य लक्षित
जय जय श्री सुदर्शन	जय जय श्री सुदर्शन॥ २॥
स्फुट तटिज्जाल पिञ्जर	पृथु-तर ज्वाल पञ्जर
परिगत प्रत्न विग्रह	परिमित प्रज्ञ दुर्ग्रह।
प्रहरण ग्राम मण्डित	परिजनत्राण पण्डित
जय जय श्री सुदर्शन	जय जय श्री सुदर्श्नन॥ ३॥
निज पद् प्रीत सद्गण	निरुपधि स्फीत षड्गुण
निगम निर्व्यूढ वैभव	निज पर व्यूह वैभव।
हरि हय द्वेषि दारण	हर पुर प्लोष कारण
जय जय श्री सुदर्शन	जय जय श्री सुदर्श्नन॥ ४॥
दनुज विस्तार कर्तन	जनि तमिस्रा विकर्तन
दनुज विद्या निकर्तन	भजदविद्या निवर्तन।
अमर दृष्ट स्व विक्रम	समर जुष्ट भ्रमि क्रम
जय जय श्री सुदर्शन	जय जय श्री सुदर्श्नन॥ ५ ॥

प्रतिमुखालीढ बन्धुर	पृथु महा हेति दन्तुर
विकट माया बहिष्कृत	विविध माला परिष्कृत ।
पृथु महायन्त्र तन्त्रित	दृढ दया तन्त्र यन्त्रित
जय जय श्री सुदर्शन	जय जय श्री सुदर्शन ॥ ६ ॥
महित संपत्सदक्षर	विहित संपत्षडक्षर
षडर चक्र प्रतिष्टित	सकल तत्व प्रतिष्टित ।
विविध सङ्कल्प कल्पक	विबुध सङ्कल्प कल्पक
जय जय श्री सुदर्शन	जय जय श्री सुदर्शन ॥ ७ ॥
भुवन नेतस्त्रयीमय	सवन तेजस्त्रयीमय
निरवधि स्वादु चिन्मय	निखिल शक्ते जगन्मय ।
अमित विश्व क्रियामय	शमित विष्वग्भयामय
जय जय श्री सुदर्शन	जय जय श्री सुदर्शन ॥ ८ ॥

द्विचतुष्कमिदं प्रभूत सारं पटतां वेङ्कटनायक प्रणीतं
विषमेऽपि मनोरथः प्रधावन् न विहन्येत रथाङ्गधुर्यगुप्तः

* * * * *

कवितार्किकसिंहाय कल्याणगुणशालिने ।
श्रीमते वेङ्कटेशाय वेदान्तगुरवे नमः ॥

* * * * *

****

HOME | STOTRA LIST | PREVIOUS ARCHIVE | NEXT ARCHIVE

Hosted by tripod